P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

हायर सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की भौक्षिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं के सम्बन्ध का अध्ययन

ममता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
आगरा कॉलेज,
आगरा, उ0 प0, भारत

सारांश

अधिकांशतः हमारी विद्यालयीन शिक्षा में पाया जाता है कि कोई बच्चा विशेष व्यावसायिक क्षेत्र को अपनाए और उसी के अनुरूप जीवन में सफलता के मानदंडों पर खरा उतरे, परन्तु विचारणीय यह है कि कान सी भावना प्रमुख होनी चाहिए, सफल होना या व्यावसायिक आकांक्षाओं का महत्व, दोनों ही ऐसे तत्व हैं जो छात्र या छात्राओं में शिक्षित होने के नाते उनमें होने चाहिए। विगत कुछ वर्षो में व्यावसायिक आकांक्षा पारिवारिक व्यक्तिगत मूल्यों पर हावी होती जा रही है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की व्यावसासिक विचारधारा तथा शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर विचार किया गया है, ताकि समाज को ज्ञात हो सके कि हमारी इस दिशा में स्थिति क्या है? इसी आधार पर हायर सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं के सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है तथा पाया गया कि व्यावसायिक आकांक्षा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

मुख्य शब्द : शैक्षिक उपलब्धि, व्यावसायिक आकांक्षा एवं हायर सेकेंडरी स्तर के छात्र एव छात्राएं।

प्रस्तावना

किसी भी बालक के जीवन में सफलता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। बालक अपनी शिक्षा किसी न किसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर ही प्राप्त करता है। प्रायः बालक अपने जीवन का जो भी लक्ष्य निर्धारित करता है, उस पर उसके माता–पिता, परिवार के सदस्यों की रुचियों, शिक्षा, सामाजिक, आर्थिक स्थिति व व्यक्तिगत मूल्यों का प्रभाव पड़ता है।

युवा वर्ग किसी व्यवसाय विशेष की आकांक्षा तो रखता ह, परन्तु उसे उस व्यवसाय में अपेक्षित व्यक्तिगत एवं व्यवसायिक योग्यताओं के विषय में जानकारी नहीं होती। ऐसी स्थिति में युवा भविष्य में अपना इच्छित व्यवसाय नहीं अपना पाते जिससे वह अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याओं का शिकार हो जाते हैं। यदि उपयुक्त समय पर सही जानकारी दी जाए तो उनकी इस समस्या का भविष्य में समाधान करना सम्भव है।

व्यावसायिक आकांक्षायें

व्यावसायिक आकांक्षाओं से तात्पर्य एक कार्य में व्यावसायिक स्तर जानने के पश्चात् जब कोई व्यक्ति अपने भावी प्रयास में व्यावसायिक स्तर पर पहुँचने का प्रयास करता है तो उसे उसका व्यावसायिक आकांक्षा स्तर कहते हैं।

'हायर सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलिब्ध पर व्यक्तिगत मूल्यो एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं का प्रभाव विषय पर पूर्ववर्ती बहुत से विद्वानों द्वारा भी विभिन्न सन्दभा में अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए गए है।

परविन्दरजीत कौर (2012) ने किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं तथा बौद्धिक स्तर में सम्बन्ध का अध्ययन किया। परिणाम रूप में पाया कि लिंग तथा विद्यालयों के प्रकार किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित नहीं करते है, लेकिन बुद्धि के विभिन्न स्तर किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित करते ह।

लियाकत बशीर एवं रमनदीप कौर (2017) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं के साथ स्कूल वातावरण के आपसी सम्बन्ध का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणाम दर्शाते है कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं के साथ स्कूल वातावरण में धनात्मक सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

ममता चावला (2018) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक आकांक्षाओं तथा उनकी उपलब्धि स्कोर में सम्बन्ध का अध्ययन किया और परिणाम में पाया कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक आकांक्षाओं तथा उनकी उपलब्धि स्कोर में सार्थक सम्बन्ध है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. हायर सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. हायर सेकेंडरी स्तर के बालक एवं बालिकाओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना।
3. हायर सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं के सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

1. हायर सेकेंडरी स्तर के बालक एवं बालिकाओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. हायर सेकेंडरी स्तर के बालक एवं बालिकाओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण चयन

1. जे. एस. ग्रेवाल (1984) की व्यावसायिक आकांक्षा मापनी।
2. हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा की अंक तालिका।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात।

प्रस्तुत विषय पर शोधकर्त्ता द्वारा आगरा शहर में स्थित बी.डी. इंटर कॉलेज, आर.बी.एस. इंटर कॉलेज तथा एच.आर. इंटर कॉलेज के छात्र–छात्राओं पर किए गए अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को अग्रलिखित रूप में देखा जा सकता है :

हायर सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन

हायर सेकेंडरी स्तर के बालक एवं बालिकाओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात मान ज्ञात किया गया जो निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है–

तालिका– 1

हायर सेकेंडरी स्तर के बालक एवं बालिकाओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
बालक	80	61.24	5.47	2.08	0.01 पर सार्थक अन्तर नहीं है
बालिका	80	63.18	6.15		

आरेख – 1

हायर सेकेंडरी स्तर के बालक एवं बालिकाओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं के मध्यमान का तुलनात्मक अध्ययन

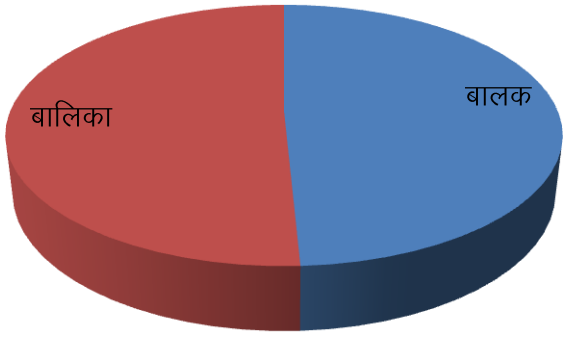

तालिका नं. 1. के अनुसार हायर सेकेंडरी स्तर के बालक एवं बालिकाओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं क प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 61.24 एवं 63.18 तथा मानक विचलन क्रमशः 5.47 एवं 6.15 ह। 158 स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 स्तर पर सार्थकता मान 1.96 तथा 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 2.57 है। गणना द्वारा क्रान्तिक अनुपात का मान 2.08 है जो 0.01 स्तर पर असार्थक है अतः परिणाम यह प्रदर्शित करता है कि छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

तालिका– 2
हायर सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं व भौक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
व्यावसायिक आकांक्षा	80	61.10	9.88	9.510	0.01 पर सार्थक अन्तर है
भौक्षिक उपलब्धि	80	70.92	8.63		

आरेख – 2
हायर सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं व शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान का तुलनात्मक अध्ययन

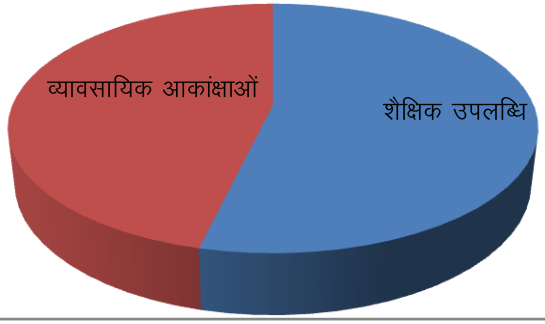

तालिका नं. 2. के अनुसार हायर सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं व शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 61.10 एवं 70.92 तथा मानक विचलन क्रमशः 9.88 एवं 8.63 ह। 158 स्वतंत्रता के अंश पर 0. 05 स्तर पर सार्थकता मान 1.96 तथा 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 2.57 है। गणना द्वारा क्रान्तिक अनुपात का मान 9.510 है जो 0.01 स्तर एवं 0.05 स्तर पर सार्थक है अतः परिणाम यह प्रदर्शित करता है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं व शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। परिणामों के आधार पर यह प्रदर्शित होता है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

निश्कर्श

हायर सकेंडरी स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों के मध्यमानों में जो अन्तर है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक आकांक्षाएं बालकों की व्यावसायिक आकांक्षाओं से अधिक ह। परन्तु दानों मध्यमान कोई सार्थक अन्तर प्रदर्शित नहीं करते हैं।

हायर सेकेन्डरी स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर व्यावसायिक आकांक्षाओं का प्रभाव पाया गया। प्रतिस्पर्धा के वर्तमान युग में माता–पिता, समाज एवं सफल होने के दबाव के कारण हर विद्यार्थी अपने व्यवसाय में स्थापित होना चाहता है।

सुझाव

1. बच्चों को इतना सक्षम बनाना चाहिए कि वे क्या उचित है या अनुचित है, इसका स्वयं ही विश्लेषण कर सक। चूंकि जो बात स्वप्रेरणा के आधार पर सीखता है उसका प्रभाव उसके ऊपर स्थायी रहता है।
2. शिक्षक छात्र–छात्राओं के भौतिक पक्ष के विकास की ओर ही नहीं ध्यान दें वरन् उनके व्यक्तित्व के विकास हेतु उपयुक्त वातावरण निर्मित करें।
3. समाज में विद्यमान वातावरण के साथ बालक को समायोजित होना है, वह भी उन मूल्यों पर आधारित हो जिनके लिए उसे प्रारम्भ से ही प्रशिक्षित किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

लियाकत बशीर एवं रमनदीप कौर (2017) "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं के साथ स्कूल वातवरण के आपसी सम्बन्ध", एन इन्टरनेशनल जरनल ऑफ एजूकेशन एण्ड अप्लाईड सोशियल साइन्स वोल्यूम – 08, पृष्ठ 269–275।

ममता चावला (2018) "माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक आकांक्षाओं तथा उनकी उपलब्धि स्कोर में सम्बन्ध", इन्टरनेशनल जरनल ऑफ रिसर्च इन सोशियल साइन्सेज, वोल्यूम – 08, अंक–04, पृष्ठ 1–9।

परविन्दरजीत कौर (2012) "किशोरों की शैक्षिक आकांक्षाओं तथा बौद्धिक स्तर में सम्बन्ध", इन्टरनेशनल मल्टीडिसिप्लिनरी ई–जरनल, वोल्यूम – 01, अंक–07, पृष्ठ 37–43।

सचवेनी, विल्ड एवं पाल (2000) "माता पिता के व्यवहार का किशोरावस्था के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन", डिजरटेशन एब्स्ट्रेक्ट, वोल्यूम– 66, पृष्ठ 17।

वी. हसन (2006) "कैरियर मैच्युरिटी ऑफ इण्डियन एडोलसेन्टस एज ए गुनेसन ऑफ सेल्फ कान्सेप्ट वोकेशनल एस्पेरेशन एण्ड जेण्डर", जरनलऑफ दा इण्डियन ऐकेडमी साइकोलोजी, वोल्यूम– 32,पृष्ठ 127–134।